

पुस्तक

जय जय श्री

मृती मृतेय

दत्त (नमो भगवते वासुदेवाय)

मोर जा

ज्योति पुत्र

जय श्री

जय श्री (१६५८)

गोमेदी

दत्त श्री देव

श्रीगुरुदेव का भाग्य